Dr. Raj Gopal
Assistant Professor (G/P.T)
Department of Philosophy
V.S.J. College Rajnagar Madhubani
Mail ID. rajgopal7765@gmail.com

Buddism Theory of No Soul.

(बुद्ध अनात्मवाद सिद्धान्त)

बौद्ध दर्शन का अनात्मवाद सिद्धान्त उसके प्रतीत्यसमुत्पाद सिद्धान्त पर आधारित है। प्रतीत्यसमुत्पाद सिद्धान्त के अनुसार प्रत्येक वस्तु का कोई न कोई कारण होता है। कारण का अन्त होने के पश्चात वस्तु का भी नाश हो जाता है। इससे प्रत्येक वस्तु चेतन एवं अचेतन दोनों की अनित्यता प्रमाणित है। बुद्ध 'सर्वं अनात्मकम्' कहते हैं इसका अर्थ है न तो आत्मा नामक नित्य द्रव्य का अस्तित्व है और न जड़ तत्व का। द्रव्यता, एकता, नित्यता एवं तादात्म्यता केवल कल्पनामात्र है। सत् केवल क्षणिक धर्म है। ये क्षणिक धर्म मिलकर संघात बनाते हैं, जिसके कारण सांसारिक वस्तुओं में एकता एवं निरंतरता दृष्टिगत होती है।

बौद्ध दर्शन में पंचस्कन्ध की व्याख्या की गयी है- रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार, विज्ञान। इसमें रूप स्कन्ध भौतिक है जो पृथ्वी, जल, अग्नि और वायु के परमाणुओं से बनता है। शेष चारो स्कन्ध मानसिक है। इस क्षणिक पंचस्कन्ध संघात को पुद्गल या आत्मा कहते हैं और क्षणिक परमाणु संघात को 'भौतिक पदार्थ' कहते हैं। ये दोनों संघात अनात्म हैं। क्योंकि इनकी नित्य एवं स्थायी सत्ता नहीं है। ये दोनों संघात केवल कल्पनामात्र हैं। वास्तविक सत्ता केवल क्षणिक विज्ञानों एवं क्षणिक परमाणुओं की है। जिसका प्रवाह निरन्तर चलता रहता है।

Scanned with CamScanner

बुद्ध का आत्मा संबंधित विचार उपनिषद के आत्मा संबंधित विचार से भिन्न है। जहाँ उपनिषद में आत्मा को नित्य अपरिवर्तनशील, अजर अमर, कुटस्थ आदि माना गया है। शरीर के परिवर्तन से आत्मा की सत्ता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। आत्मा सत्ता जन्म से पूर्व एवं मृत्यु के पश्चात भी कायम रहती है। बुद्ध ने इसके विपरीत अनित्य आत्मा की सत्ता को स्वीकार किये हैं। वे अनात्मवाद या नैरात्मवाद सिद्धान्त का प्रतिपादन करते हैं। वे आत्मा को क्षणिक पंच स्कन्धों का संघात मानते हैं जो निरंतर परिवर्तनशील हैं। वे परिवर्तनशील आत्मा की सत्यता को स्वीकार करते हैं।

बुद्ध के मतानुसार आत्मा अनित्य है। यह अस्थायी शरीर और मन का संकलन मात्र है। बुद्ध ने आत्मा को क्षणिक विज्ञानों का प्रवाह मात्र माना है। जिस प्रकार नदी की जलधारा में निरंतर परिवर्तन होते रहते हैं फिर भी उसमें एकरूपता रहती है - उसी आत्मा के विज्ञान के निरंतर बदलते रहने पर भी उसमें एकरूपता रहती है। नागसेन ने आत्मा के स्वरूप की व्याख्या करते हुए कहा है कि जिस प्रकार धुरी, पहिए, रस्सियों का संघात विशेष का नाम रथ है। उसी प्रकार आत्मा पंच स्कन्धों का समष्टि का नाम है। स्कन्धों में परिवर्तन होने के कारण आत्मा भी परिवर्तनशील है। बुद्ध का कहना है कि जिस प्रकार किसी अदृष्ट, अज्ञात, कल्पित रमणी से प्रेम करना हास्यास्पद है। उसी प्रकार अदृष्ट आत्मा के प्रति अनुराग रखना हास्यास्पद है। आत्मा भौतिक तथा मानसिक तत्वों के एक समष्टि का नाम है। जब तक संघात कायम रहता है आत्मा का अस्तित्व है। संघात के नष्ट होने पर आत्म तत्व का विलोप हो जाता है। इस संघात को उपनिषद में नाम-रूप कहा जाता है।

पाश्चात्य दार्शनिक ह्यूम ने भी नित्य आत्मा की सत्ता का खंडन किया है। हम अपने अनुभव में कभी भी नित्य आत्मा के विचार के अनुरूप कुछ नहीं पाते हैं। 'जब मैं अपनी आत्मा को पकड़ने के लिए अपने भीतर अत्यंत गहराई से प्रवेश करता हूँ तो मैं किसी आत्मा को नहीं पकड़ पाता हूँ। कुछ संवेदनाओं से टकराकर रह जाता हूँ जो सुख, दुःख, प्रेम, घृणा आदि के होते हैं। इसलिए आत्मा विज्ञानों के प्रवाह के अतिरिक्त कुछ नहीं है। विलियम जेम्स ने भी आत्मा शब्द से किसी नित्य भाव को नहीं माना है। ये आत्मा के लिए संवेदनाओं, आवेगों एवं भावनाओं का प्रवाह मानता है।

पुनर्जन्म का सिद्धान्त अनित्य आत्मा से संगत नहीं है। इसके लिए नित्य आत्मा की सत्ता में विश्वास आवश्यक है। बुद्ध नित्य आत्मा की सत्ता का निषेध करके पुनर्जन्म की व्याख्या की है। बुद्ध के मतानुसार पुनर्जन्म का अर्थ एक आत्मा का दूसरे में प्रवेश करना नहीं बल्कि पुनर्जन्म का अर्थ विज्ञान प्रवाह की अविच्छिन्नता है। जब एक विज्ञान प्रवाह का अन्तिम विज्ञान समाप्त हो जाता है तब अन्तिम विज्ञान की मृत्यु हो जाती है और एक नये शरीर में नये विज्ञान का प्रादुर्भाव होता है। इसी को बुद्ध ने पुनर्जन्म कहा है। बुद्ध ने पुनर्जन्म की व्याख्या दीपक की ज्योति से किया है। जिस प्रकार से एक दीपक से दूसरे दीपक को जलाया जा सकता है, उसी प्रकार से वर्तमान जीवन की अंतिम अवस्था से भविष्य जीवन की प्रथम अवस्था का विज्ञान संभव है। अतः नित्य आत्मा के बिना भी बुद्ध ने पुनर्जन्म की व्याख्या करते हैं।